Peer reviewed Journal

Impact Factor:7.265

ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

April-2022 Volume-13 Issue-21

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Editor

Dr. M.N. Kolpuke

Principal,

Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga, Dist. Latur

Dr. V.D. Satpute

Principal,

Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth, Dist. Parbhani

Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot,No-23,Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth Dist. Parbhani

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1.	काळा पैसा व भारतीय अर्थव्यवस्था **प्रा.डॉ. डी. पी. कांबळे**	1-6
2	चिरस्थायी विकास काळाची गरज **प्रा. डॉ. अंबादास पांडुरंग बर्वे**	7-11
3	जागतिकीकरणाचा मराठी ग्रामीण कवितेवरील परिणाम **प्रा.सखाराम बाबाराव कदम**	12-18
4	जागतिकीकरणानंतर वाणिज्याचे बदलते प्रभाव **डॉ. बालाजी शिवाजी राजोळे**	19-22
5	वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य पर प्रभाव हिंदी भाषा का वैश्विक दायरा बढ़ने से रोजगार के वसर **डॉ.संगीता राहुल यादव**	23-24
6	सुशीला टाकभौरे की कविता में दलित चेतना **सहा.प्रा. योगेश्वर रामजी कु-हाडे**	25-28
7	सार्वजनिक खाजगी भागीदारी **डॉ.सोमवंशी मुक्ता गोविंदराव**	29-32
8	वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य पर प्रभाव **प्रा. डॉ. वनिता बाबुराव कुलकर्णी**	33-36
9	सामाजिक विषमतेची जाणीव **प्रा.डॉ. जोशी रोहिणी सुधाकर**	37-39
10	जागतिकीकरणाचा भाषा व साहित्यावरील परिणाम **डॉ. मीनाक्षी देव (निमकर)**	40-43
11	जागतिकीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्था **प्रा. मोटे भैरवनाथ बब्रुवान, डॉ. शेषेराव एस. देवनाळकर**	44-47
12	हिंदी साहित्य में अनुवादित मराठी दलित आत्मकथाएं **डॉ. गोरे मृणाल शिवाजीराव**	48-49
13	अहमदनगर जिल्ह्यातील अनुसूचित जमातीवर प्रसार माध्यमांचा पडलेला भाव जागतिकीकरणाच्या संदर्भात **प्रा.विलास माणिकराव गायकवाड**	50-52
14	महिला उद्योजका समोरील प्रश्न एक अभ्यास **प्रा. उषा यशवंतराव माने**	53-55
15	रशिया युक्रेन संघर्षाचा जागतिक राजकारणावरील परिणाम-विशेष संदर्भ भार **प्रा.बदनाळे शिवरुद्र शरणप्पा**	56-57
16	महिला सक्षमीकरण आणि स्वयं - सहायता बचत गटांची भूमिका: विशेष संदर्भ परभणी जिल्हा ,(महाराष्ट्र) **डॉ. सुभाष तातेराव पंडित**	58-62
17	20 व्या शतकातील जागतिक पातळीवरील विकासाच्या हक्काचा प्रवास **डिके विनोद रमेश**	63-68
18	आशा सेविकांचे ग्रामीण विकासातील आरोग्यदविषयक कार्यः एक चिंतन **प्रा. सौ. धनश्री लोकचंद राणे, डॉ.सुनिता श्री. बाळापुरे**	69-71

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 20 April 2022, Volume-13, Issue-21

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

प्रा. डॉ. वनिता बाबुराव कुलकर्णी
हिंदी विभागाध्यक्षा, कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ.ता.सोनपेठ जि. परभणी
मेल-kulkarnivanita02@gmail.com

प्रस्तावना — वैश्वीकरण पुँजीवादी व्यवस्था का अत्यंत आधुनिक एक विस्तृत रूप है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है और इस वैश्वीकरण के युग मे प्राय: लेखक और पाठक वेबसाईट रीडर बनते चले गये है। वैश्वीकरण प्रभुत्वशाली केंद्र का नाम है। असल मे भूमंडलीकरण के केंद्र मे अर्थव्यवस्था ही है। निजिकरण से कारोबार का क्षेत्र प्रभावित हो चुका है। आज के युग मे भूमंडलीकरण के कारण जीवन मूल्यों मे काफी बदलाव हो रहा है। वैश्वीकरण का रथ आज के युग मे रोका नही जा सकता है। हर घर मे आज बाजारवाद दिखाई देने लगा है, मानव भी मानों एक प्रॉडक्ट ही बन कर रह गया है। आज सारा विश्व गाव मे तब्दील हुआ है। पलक झपक तेही सारी दुनिया की सारी जानकारी उपलब्ध होती है। वैश्विकरण ने विश्व बाजार का एकीकरण किया है। 20 वी शताब्दी के अंतिम दशक की शुरुवात मे यूपीए सरकार ने भूमंडलीकरण को अपनाना प्रारम्भ किया था। उन्होने ' विश्व ग्राम ' की अवधारणा को कार्यान्वित करते हुए भूमंडलीकरण के महत्त्व को स्थापित करने का संकल्प किया था। सन 1995 में गेट करार का परिवर्तित स्वरूप, विश्व व्यापार संघटना की स्थापना के उपरांत भारत मे भूमंडलीकरण का दौर अधिक तेजी से पनपने लगा। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण, इसी की उपज है। इंटरनेट स्पेशल इकॉनॉमिक झोन,मॉल, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, इलेक्ट्रॉनिक मिडीया, मॉडेलिंग, मार्केटिंग, विपनण (मार्केटिंग) ई- बँकिंग, ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्र भूमंडलीकरण के साथ विस्तार पा रहे है। व्यापारीकरण ने समाज, शिक्षा, राजनीति, साहित्य-संस्कृती के साथ रोजमर्रा की जिंदगी को भी प्रभावित किया है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था मे एकीकरण भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण कहलाता है। 21 वी सदी मे समय, समाज, संस्कृती देश और भाषा मे परिवर्तन आ रहा है। परंतु इससे घबराने की आवश्यकता नही है। परिवर्तन युग की मांग है। इस युग परिवर्तन का अन्य एक नाम है वैश्वीकरण अर्थात ग्लोबलायझेशन आज यह शब्द अपेक्षाकृत नया और काफी प्रचलन मे आया शब्द है। इसे हिंदी के साथ जोडकर अक्सर सुना जाता है हिंदी भाषा और साहित्य पर इसका प्रभाव गहरा है। वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य जगत को रूपायित किया है। इस संदर्भ में ग्लोबल होती हिंदी साहित्य पर चर्चा अनिवार्य है।

वैश्विकरण का अर्थ उद्भव एवं विकास—

'Globlization' अंग्रेजी का शब्द है। इस शब्द की रचना इस प्रकार होती है- मूल शब्द 'Globe ' है । इसका अर्थ है 'गोल' अथवा 'पृथ्वी' Globe का Adjectivre (विशेषण) Global होता है। इसका अर्थ है-Taking in whole World (पूरे विश्व को समाहित करने वाला) Global से बना हुआ Verb (क्रिया) है।

अंग्रेजी Globalization शब्द का हिंदी अनुवाद 'वैश्वीकरण' है। इसका पर्यायवाची शब्द भूमंडलीकरण है। इस शब्द की उत्पत्ति इस प्रकार है- "अविश्वम विश्वम यथा स्थान तथा इति वैश्वीकरणम"

अर्थात जो विश्व नही है व जैसे विश्व बन जाये वैसा करना वैश्वीकरण है। विश्व शब्द विश धातू से ' व ' प्रत्यय लगने पर व्युत्पन्न होता है। वैश्वीकरण बनाने के लिए इसमें च्वि प्रत्यय लगाया जाता है।

वैश्वीकरण की परिभाषा —

(1) प्रोफेसर के मनस्वी के अनुसार - "उदारीकरण आर्थिक विकास एवं निजीकरण के सामंजस्य की विश्व स्तरीय प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते है।

(2) प्रोफेसर टी राघवन ने कहा है- " विश्व की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं मानवी समस्याओंका समाधान जब विश्व के एक वैचारिक मंच पर होता है तब वैश्वीकरण का संकेत मिलता है।"

Late Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani

(3) श्रीमती आर के शर्मा के अनुसार, " वैज्ञानिक प्रगती आर्थिक समानता एवं मानव कल्याण के लिए किये गये विश्वस्तरीय प्रयास वैश्वीकरण की परिधि मे आते है।" (4) प्रोफेसर एस के दुबे के शब्दों मे "वैश्वीकरण के अंतर्गत वे सभी शैक्षणिक सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाएँ आती है।"

वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य पर प्रभाव —

वैश्वीकरण एक ऐसी विचारधारा है जिससे सामाजिक संबंधों का विकास होता है। " वैश्वीकरण की नयी अर्थव्यवस्था विकसित देशों की ही देन है। वैश्वीकरण को आज संस्कृतीक साम्राज्यवाद के रूप में देखा जा रहा है। इंटरनेट, साइबर स्पेस, सायबर कॅफे सभ्यता का इतिहास, सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना क्रांती का इस पर गहरा असर पडा है।"1 ज्ञान की अर्थव्यवस्था भूगोल विदेशी निवेश व पुंजी प्रवाह की यह देन है। हिन्दी विश्व के देशों की भारतीय संस्कृती को जिंदा रहने के लिए मातृभाषा या मूल भाषा ही नही प्राणभाषा भी है। हिंदी विश्वभर मे बस रहे भारतवासीयो की सांस्कृतिक भाषा है, जिसकी लंबी ऐतिहासिक परंपरा है, और यही "हिंदी भाषा" की शक्ति है, जो विश्व के धरातल पर अपना स्थान दिन- प्रतिदिन उच्च शिखर पर ले जा रही है।

भूमंडलीकरण मे जीवन तथा समाज के सभी पहलु समाविष्ट है, इसनें वैश्विक स्तर पर क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा किया है इन परिवर्तनों का प्रभाव न केवल देशों की कुटनीति, राजनीति, आर्थिक नीतीयों पर पडा वरना सामाजिक क्षेत्र भी अछुते नही रहे। भूमंण्ड
डलीण्डलीकरन और उपभोक्तावाद के विषय मे गिरिश मिश्र ने लिखा है, " हम आपको वह हर चीज बेचेंगें जिसकी आपको आवश्यकता है, किन्तु हम चाहते है की आपको उन्ही वस्तुओं की आवश्यकता हो जिन्हे हम बेचना चाहते है।"2 भारत विकासशील देश है जहाँ का मध्यवर्ग एक बडे उपभोक्ता के रूप मे बाजार के समक्ष खडा है। बाजार मे वस्तुओं से लेकर विचारों तक की खरीद फरोक्त की जा रही है। हिंदी महिला साहित्यकार प्रभा खतान ने इस संदर्भ मे सटीक लिखा है- "भूमंण्डलीकरण जीवन के हर कोने अस्तित्व के हर रूप का वस्तूकरण करता है।"3 खरीद फरोक्त के चलन मे उपभोक्ता को बाजार की और खिचने का काम भाषा करती है। भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ती का सशक्त माध्यम ही नही अपितु सभ्यता और संस्कृति की सवांहिका भी होती है। भाषा के द्वारा ही मनुष्य समाज से समाज राष्ट्र से तथा राष्ट्र विश्व से जुड पाता है। डॉ. मॅनेजर पांडेय का मानना है, " समाज भाषा की जन्मभूमि है कर्मभूमी भी। समाज ही भाषा का मुख्य स्त्रोत है और समाज के कर्ममय जीवन मे भाषा की क्रियाशीलता सार्थकता पाती है।" भूमंडलीय विस्तार आज के युग की ऐसी अनिवार्यता है जिसके बिना समुच्या विश्व आगे नही बढ सकता भूमंडलीकरण समर्थन विरोध मे अलग- अलग मत है- भूमंडलीकरण के असली चेहरे पर प्रकाश डालते हुए विख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर यशपाल जी ने लिखा है- "भूमंडलीकरण एक स्वेच्छा कारी प्रक्रिया है जिसके नियमों का पालन हमे करना पडेगा और हम सब को उसके पीछे चलना पडेगा ये यह भी तय करेंगी कि हमारी स्थितीयाँ कैसी होगी उन्हे कैसे होना चाहिए।"5 भूमंडलीकरण के फैलाव से अनेक संकट भी पैदा हुए है। परंतु हमे इसके उज्वल पक्ष की और भी दृष्टिपात करना चाहिए।

हिंदी एक ऐसी क्रियाशील सार्थक भाषा है जिसने अपनी महत्ता तथा अस्तित्व को कायम रखा है। हिंदी का स्वरूप विराट है। जब हम विश्व के रंग मंच पर खडे होकर दृष्टिपात करते है तो पाते है कि विश्व के अनेक देशों मे हिंदी का वर्चस्व कायम है। आज के इस भूमंडलीकरण के युग मे हिंदी भाषा और उसका साहित्य दिनो- दिन प्रगती के पथ पर रहा है। आज हिंदी केवल राष्ट्रभाषा या संपर्क भाषा नही है अपितु ' ' 'विश्वभाषा' है। आज के इस तकनिकी युग मे हिंदी का महत्व सर्वोपरी है। उल्लेखनीय बात यह है कि आज संसार के लगभग सवासो विश्वविद्यालयोमे हिंदी सिखाई पढाई जा रही है। अनेक विदेशी विद्यालयों में हिंदी मे शोध कार्य हो रहा है। हिंदी मे रचना करनेवाले अनेक लेखक जो प्रवासी है, विदेशो मे भी अपनी कलम द्वारा हिंदी को समृद्ध बना रहे है। इंग्लंड, ऑस्ट्रेलिया, फिजी,

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

मौरिशस, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, सूरीनाम, कॅनडा, आनेकानेक देशो मे हिंदी लेखक अपनी रचनाओंद्वारा हिंदी साहित्य को अपना अमूल्य योगदान दे रहे है। डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के पीछे गिरमिटिया मजदूरों तथा अन्य प्रवासी लोगों के सहयोग को मानते हुए लिखते है- हिंदी भाषिक मजदूरों ने हिंदी को विश्व भाषा बनाया है। विश्व भाषा के रूप मे हिंदी दुनिया का भविष्य उज्वल है। साम्राज्यवादी प्रभुत्व के दिन गये।"6

ऑनलाइन हिंदी साहित्य—

हिंदी साहित्य सूचना क्रांती, डिजिटल क्रांती, सैटेलाइट क्रांती के संपर्क वैश्वीकरण का लाभ उठा रहा है, इसका स्पष्ट प्रमाण है इंटरनेट में हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता। आज इंटरनेट पर हिंदी के महापुरुषों की जीवनीयाँ , हिंदी साहित्यकार, नाटक कहाणी, उपन्यास के साथ- साथ भेंटवार्ताएँ आदि भी उपलब्ध है। इसके साथ ही प्रकाशकाने अपनी- अपनी वेबसाईट बना रहखी है, जिसके द्वारा ही अनेक रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण पुस्तके पढणेवालों को घर बैठे मिल रही है। साथ ही ई- संस्करण की सुविधा से हिंदी की कई पुस्तके पाठक अपने रुची और काम के अनुसार चयन करने लगा है। साथ ही हिंदी के अनेक पत्रिकाओके ई- संस्करण जारी किये है। तदनुसार आज मधुमती,ज्ञानोदय, कथादेश, वांग्मय जैसी पत्रिकाये इंटरनेट पर उपलब्ध है। कबीर, सूर, तुलसी, रहिम प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चंद्र, रामचंद्र शुक्ल, निराला, प्रसाद महादेवी, हरिवंश राय बच्चन आदी कवियो, साहित्यकारों की रचनाये इंटरनेट पर उपलब्ध है। साथ ही भक्तिकालीन कवि तुलसीकृत "रामचरित मानस" अब डिजिटल रूप मे इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज विभिन्न भाषाओं की कृतियाँ हिंदी में और हिंदी कृतियाॅं विदेशी भाषा मे अनुदित होकर उपलब्ध होने लगी है। इसके साथ ही ये रचनाये इंटरनेट मे भी उपलब्ध है। प्रेमचंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, आदी की रचनाये अनुवाद के सशक्त उदाहरण है। इस तरह से भाषिक वैश्वीकरण मे अनुवाद का स्थान महत्त्वपूर्ण है। साथ ही अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ती के लिए ब्लॉग एक महत्त्वपूर्ण साधन बना है। इस प्रकार फेसबूक, व्हॉट्सएॅप जसे सोशल मीडिया मे भी हिंदी साहित्यकार सक्रिय है।

ऑफलाइन हिंदी साहित्य —

इसमे सामान हिंदी साहित्य आता है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी के युग मे हिंदी के इस साहित्य रूप का विस्तार हुआ है, और हिंदी साहित्य को एक नूतन स्वरूप प्राप्त हुआ है। आज हिंदी साहित्य पर वैश्वीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। विदेशो में रेडिओ प्रसारण मे स्थानिक समालोचक हिंदी मे योगदान दे रहे है। आज अनेक विदेशी कंपनियाॅं अपने स्वार्थ के लिए हिंदी के द्वारा छोटे- छोटे गाॅंवो तक पहुंची है। एक तरह से आज बाजारू संस्कृती का उदय हुआ है। हिंदी भारतीय राष्ट्रीय एकात्मता को बढावा देनेवाला साधन है। "भारत की सांस्कृतिक सामाजिक भाषात्मक एकात्मता को एकता के धागे मे पिरोने का कार्य करने वाली हिंदी एक मात्र भाषा है, जो अपने बलबुते पर भारत मे ही नही बल्की विदेशों मे भी प्रयुक्त होने लगी है। विश्वभाषा मे हिंदी की यह महिमानवीत स्थिति वैश्विक सत्ता को पुष्ट कर रही है।"7 हिंदी विश्व की श्रेष्ठ भाषा बनी ही है इसका मुख्य कारण हिंदी का विशाल शब्द भंडार है राजनीति को अलग रखकर हम देखे तो समूचे जगत मे अधिक मात्रा मे लोग हिंदी समजते तथा बोलते है अब हिंदी के साथ अंग्रेजी और सामान्य बोलचाल की भाषा का मिश्रण आम बात हो गई है। हिंदी साहित्य भी नयीवाली हिंदी का स्वरूप ग्रहण किया है। इस नई वाली हिंदी मे अंग्रेजी पाठको को भी हिंदी की और आकर्षित किया है। और साथ ही हिंदी मे बोलने लिखने और पढणे मे गर्व का अनुभव महसूस करते है। हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं में भूमंडलीकरण का असर प्रकट है। बाजार के विविध रूप और दृश्यों जैसे शेअर बाजार, मुद्रास्फीति, संवेदी सूचकांक, विज्ञापन, महाजनी पुंजी, तेल की कीमते, टेलिव्हिजन, कंप्यूटर उद्योग, पर्यावरण, मिडीया, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ,मुनाफा, भ्रष्टाचार, रिश्वत व्यवहार, नये अर्थशास्त्रीय सिद्धांत आदि संबंधी सूचनाएँ एवम संकेत आते है। हिंदी कहानी साहित्य मे भी भूमंडलीकरण का प्रभाव प्रकट है। राजेश जैन की कहानी " क्यू मे खडी उदासी"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

बहुराष्ट्रीय कंपनी मे काम करने वाले युवा लोगों के धिरे- धिरे रोबोट बनते चले जाने का और मानविय संवेदनाओंसे कटते जाने का सबसे अच्छा उदाहरण है। हिंदी कहानी की भांति उपन्यास साहित्य मे भी आज भूमंडलीकरण का सशक्त रूप विद्यमान है। प्रदीप सौरभ ,अलका सरावगी, जेसे रचनाकारोने अपने उपन्यासो मे भूमंडलीकरण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। प्रदीप सौरभ का "मुन्नी मोबाईल" अलका सरावगी का एक "ब्रेक के बाद" उपन्यासों में भूमंडलीय व्यापार जगत, मोबाईल क्रांती, इंडिया की इकॉनोमी कल्चर, विकास की द्रुतगति आदि पर केंद्रित है। इस प्रकार हिंदी साहित्य के अन्य विधाओं मे भी वैश्वीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टीगत होते है।

सारांश —

आज हिंदी किसी प्रदेश विशेष की भाषा न रहकर समूचे देश की भाषा बन गई है। विदेशो में भी इसका पठन- पाठन हो रहा है। प्रवासी भारतीय साहित्य आंतरराष्ट्रीय फलक पर हिंदी को अपनी विशिष्ट पहचान दिला रहा है। इस प्रकार हिंदी भाषा और साहित्य का दायरा विश्व के मानचित्र पर बढा है। हिंदी साहित्य वर्चुअल वर्ल्ड मे अपने व्यक्तित्व मे स्थिरता लायी है। हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आज के लेखक, साहित्यकार, वर्तमान समय की सच्चाईयों और प्रवृत्तियों को पहचानकर और समझ कर रचना करे। भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष मे विश्व के अनेक देशो ने समय की मांग को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा को अपना लिया है। फलस्वरूप हिंदी भाषा का महत्व और भी बढ गया है। वैश्वीकरण के इस युग मे अन्य भाषा- भाषी भी हिंदी मे अपने अनुभूति को अभिव्यक्त करणे मे गौरव महसूस कर रहे है। इस प्रकार हिंदी अपनी ही शक्ती और उर्जा तथा सूचना क्रांती के उपलब्ध नये यांत्रिक उपकरणों के साथ अपना सामंजस्य स्थापित करते हुए विश्व मंच पर भारत का गौरव बढा रही है। हिंदी मे अनेक रूपता की भरमार है। यह अनेकरूपता ध्वनी स्तर पर लेखन के स्तर पर शब्द स्तर पर, वाक्य स्तर पर पाई जाती है। वर्तमान में आवश्यकता है हिंदी के सर्वमान्य मानविकृत रूप को अपनानेकी और इसे व्यावहारिक स्तर पर प्रचलित करने की क्योकि हिंदी जन -जन की भाषा है। इसका प्रसार भी भाषाई ज्ञान के दायरो से दूर व्यावहारिकता की छाव मे ही हो सकता है।

संदर्भ —

(1) हिंदी का वैश्विक परिदृश्य- डाॅ मंजु रानी- मानसरोवर प्रकाशन - पृष्ठ 5

(2) भूमंडलीकरण: मिथक या यथार्थ - गिरीश मिश्र एवं पांडेय - अभिदा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर,- सन 2005 - पृष्ठ 101

(3) बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ- प्रभा खेतान- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली. सन 2004- पृष्ठ 32

(4) भूमंडलीकरण साहित्य समाज और संस्कृति- शशि भूषण कुमार 'शशी' (संपा) च ॲक्सिस बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली- सन 2013- पृष्ठ 2097

(5) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास - रोशन कुमार- पृष्ठ 2011

(6) हिंदी मत और अभीमत - कांती विमलश वर्मा- प्रकाशन विभाग- सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली- सन 1996- पृष्ठ 99

(7)वर्तमान परिप्रेक्ष मे भारतीय भाषा तथा साहित्य का अध्ययन- अध्यापन- संपा. प्रो. डॉ. माधव सोनटक्के, डॉ हनुमंतराव पाटील - पृष्ठ 49.

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani